# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| **अध्याय प्रथम : श्रमण परम्परा और तीर्थंकर** | | **1** |
| परिच्छेद एक | जैन धर्म की प्राचीन परम्परा | 3 |
| परिच्छेद दो | तीर्थंकर परम्परा – ऋषभदेव, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ | 8 |
| **अध्याय द्वितीय : तीर्थंकर महावीर और जैन धर्म** | | **19** |
| परिच्छेद एक | तीर्थंकर परम्परा में भगवान् महावीर | 21 |
| परिच्छेद दो | महावीर की श्रमण दीक्षा और निर्वाण | 32 |
| परिच्छेद तीन | भगवान् महावीर की शिष्य परम्परा और जैन संघ | 41 |
| परिच्छेद चार | जैन धर्म के प्रभावक आचार्य | 47 |
| परिच्छेद पाँच | देश के विभिन्न भागों में जैन धर्म | 54 |
| **अध्याय तृतीय : जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्त** | | **71** |
| परिच्छेद एक | षडद्रव्य व्यवस्था एवं लोक स्वरूप | 73 |
| परिच्छेद दो | नव पदार्थ निरूपण | 81 |
| परिच्छेद तीन | कर्मवाद एवं पुरुषार्थ | 89 |
| परिच्छेद चार | रत्नत्रय–मोक्षमार्ग | 98 |
| परिच्छेद पाँच | श्रावकाचार | 112 |
| परिच्छेद छह | मुनि का आचार | 126 |
| **अध्याय चतुर्थ : जैन परम्परा की भाषाएँ एवं साहित्य** | | **143** |
| परिच्छेद एक | प्राकृत भाषा एवं साहित्य | 145 |
| परिच्छेद दो | अपभ्रंश एवं संस्कृत जैन साहित्य | 157 |
| परिच्छेद तीन | तमिल, कन्नड़ एवं अन्य भाषाओं का जैन साहित्य | 169 |

| | | |
|---|---|---|
| **अध्याय पंचम : जैन कला, पुरातत्व और ग्रन्थ–भण्डार** | | **177** |
| परिच्छेद एक | जैन गुफाएँ एवं मन्दिर | 179 |
| परिच्छेद दो | जैन मूर्तिकला का वैभव | 191 |
| परिच्छेद तीन | जैन चित्रकला का वैशिष्ट्य | 195 |
| परिच्छेद चार | जैन स्मारक, तीर्थ–स्थल और ग्रन्थ–भण्डार | 201 |
| **अध्याय षष्ठ : 21वीं सदी में जैन धर्म** | | **211** |
| परिच्छेद एक | जैन धर्म के सम्प्रदाय | 213 |
| परिच्छेद दो | प्रमुख जैन व्यक्तित्व | 219 |
| परिच्छेद तीन | दैनिक जीवन पद्धति | 222 |
| परिच्छेद चार | जैन पर्व एवं त्योहार | 229 |
| परिच्छेद पाँच | जैन संस्कृति और पर्यावरण | 233 |
| परिच्छेद छह | विदेशों में जैन धर्म एवं अध्ययन | 238 |
| परिच्छेद सात | वर्तमान विश्व और जैन धर्म | 242 |
| **परिशिष्ट (क) : प्रमुख सूक्तियाँ : तीर्थंकर वाणी** | | **253** |
| **परिशिष्ट (ख) : आधारभूत सन्दर्भग्रन्थ** | | **258** |
| **परिशिष्ट (ग) : जैन कला वैभव चित्र–परिचय** | | **262** |


♦♦♦